International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 413-420

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 413-420
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-08-2020
Accepted: 21-09-2020

ऋचा
एम. फिल. शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

श्रुति
एम. फिल. शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
ऋचा
एम. फिल. शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

वैदिक यज्ञों पर हुए शोध कार्यों का सर्वेक्षण

ऋचा, श्रुति

सारांश
ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद ईश्वरीय ज्ञान है जिसे सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को दिया था| ईश्वर प्रदत्त यह ज्ञान सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद सभी मनुष्यों के लिए यज्ञ करने का विधान करते हैं। ऋग्वेद के मंत्र में 'स्वाहा यज्ञं कृणोतन'[1] कहकर ईश्वर ने स्वाहापूर्वक यज्ञ करने की आज्ञा दी है ऋग्वेद के मन्त्र में 'यज्ञेन वर्धत जातवेदसम्'[2] कहकर यज्ञ से अग्नि को बढ़ाने की आज्ञा है। इसी प्रकार यजुर्वेद के मन्त्र में 'समिधाग्निं दवस्यत धृतैर्बोधतातिथिम्'[3] कहकर समिधा से अग्नि को सूचित करने व घृत से उस अग्निदेव अतिथि को जगाने की आज्ञा है। 'सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन'[4] के द्वारा आज्ञा है कि सुप्रदीप्त अग्नि ज्वाला में तप्त घत की आहुति दो।[5]

कूट शब्द : यज्ञ, यज्ञ का स्वरूप, सोम, सोमयाग, सर्वेक्षण।

प्रस्तावना
वैदिक धर्म कर्मकाण्ड प्रधान है समस्त वैदिक साहित्य यज्ञ की पृष्ठभूमि में आलोकित है संपूर्ण सृष्टि यज्ञमय है यज्ञ ही निखित जगत की उत्पत्ति का केंद्र है चराचर-दृष्टादृष्ट समस्त जड़ चेतन इसी यज्ञ क्रिया के परिणाम हैं इसलिए ऋचा उदघोषित करती है कि" यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् "अर्थात् यज्ञ से देवों ने यज्ञ-रूप प्रजापति का यजन किया था। यज्ञ क्रियाएं ही प्रथम धर्म के रूप में अनुस्यूत हैं यज्ञनुष्ठान् से मानवीय ऐहिकामुष्मिक कामनाओं की पूर्ति संभव है।[6]

---

[1] ऋग्वेद 1/13/12
[2] ऋग्वेद 2/2/1
[3] यजुर्वेद 3/1
[4] यजुर्वेद 3/2
[5] https://.quora.com
[6] वैदिक वाङ्मयमें चातुर्मास्य यज्ञ

पाणिनि के व्याकरण के आधार पर वेद शब्द विद् धातु से निष्पन्न है विद् ज्ञाने, विद् सत्तायाम्, विद्लृलाभे और विद् विचारणे अर्थात् ज्ञान, सत्ता, लाभ और विचारण के अर्थ में इस धातु का प्रयोग मिलता है।[7]

विश्व साहित्य में वेद का स्थान

संसार में अनेक देश, जातियां और अनेक संस्कृतियां विद्यमान हैं| प्रत्येक की संस्कृति एवं साहित्य अलग-अलग हैं| इतना होने पर भी भारतीय संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाले इस वेदरत्न की प्राचीनता सर्वोत्कृष्ट है। इस तथ्य की स्वीकृति विदेशिकों ने भी मुक्तकण्ठ से की है।[8]

वेदांग साहित्य में संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद तथा वेदांग हैं। वेदस्य अंग :वेदांग:। 6 वेदांग हैं

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्
तस्मात्सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥

(पा.शि-.41, 42)

वेदांग के तीन उद्देश्य हैं अर्थबोध -व्याकरण, निर्रुक्त| उच्चारणाय -शिक्षा, छन्द। याजिकप्रयोगाय -कल्प, ज्योतिष| वेदांग का दूसरा अंग कल्प है ब्राह्मण काल में यज्ञों का प्रचार। "यागानां पूर्णपरिचयप्रदायक ग्रंथानामावश्यकता"। "यागानामावश्यकताः कल्पसूत्रेषु विहिताः"। वेद में विहित याजिक कर्मों की व्यवस्था कल्प शास्त्रों में की गई है।

कल्पसूत्र 4 हैं -श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्वसूत्र ।

वैदिकयज्ञाः श्रौतयागाः कथ्यन्ते।

ऋग्वेद श्रौतसूत्र -आश्वलायन, शांखायन
शुक्ल यजुर्वेद श्रौत सूत्र -कात्यायन

कृष्णयजुर्वेद श्रौतसूत्र -बोधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, वैखानस, भारद्वाज, मानव।

सामवेद श्रौतसूत्र -आर्षेय, लाट्यायन, द्राह्यायण, जैमिनीय

अथर्ववेद श्रौत सूत्र- वैतान

सहिंता की अपेक्षा ब्राह्मण ग्रंथों में श्रौतकर्म की जानकारी अधिक विस्तृत देखी जाती है। उनमें श्रौत की परंपरा, प्रयोग, यज्ञ के प्रकार, यज्ञ कब किये, किसने किए, आदि विषय देखने में आते हैं। इससे यही मानना चाहिए कि कल्प का मूल आधार संहिता और ब्राह्मण हैं। वेदांगों में कल्प का दूसरा स्थान है। 'हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते' कह कर पाणिनि ने इस कल्प की चार शाखाएं कही हैं। श्रौतसूत्र, ग्रहसूत्र, धर्मसूत्र और शुल्बसूत्र। श्रौतसूत्र में श्रौतकर्म का विधान, ग्रहसूत्र में उपनयनादि संस्कारों का विधान है। धर्मसूत्र में मानव के लिए धर्म और नियमों का संकलन किया है। शुल्बसूत्र के द्वारा वेदकालीन वास्तुशास्त्र की जानकारी मिलती है।

यज्ञ

वैदिक धर्म की विशेषता यज्ञ हैं ऋग्वेद काल में यज्ञ शब्द यजन, पूजन या उपासना के सामान्य अर्थ में भी आया है किंतु बाद में अग्नि में आहुति देने के साथ अनेक प्रकार की क्रियाओं से युक्त अनुष्ठान को ही यज्ञ समझा जाता रहा है। अशेष ब्रह्माण ग्रंथ इन्हीं यज्ञप्रपंचों से भरे पड़े हैं। यज्ञ संस्था का इतना अधिक विस्तृत प्रचार अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। यज्ञों में प्रमुख हैः अश्वमेध, राजसूय, पुरुषमेध, दर्शपूर्णमास, अग्निष्टोम आदि। यह यज्ञ तीन प्रकार के माने जाते हैंः हविर्याग, सोमयाग, पाकयज्ञ। अग्नि के तीन प्रमुख रूप माने गए हैंः गार्पत्य, आह्वनीय और दक्षिणाग्नि। शस्त्र, स्तोम, अनुवाक्या, अनुयाज्या प्रभृति अनेक परिभाषित शब्द यज्ञ से संबंधित हैं। चमस, द्रोण, उपयाम प्रभृत्ति अनेक यगिय पात्र होते हैं। वस्तुतः यज्ञ का विवरण संहिताओं से आरंभ होकर ब्राह्मणों एवं परवर्ति सूत्रों में इतना अधिक बढ़ गया है कि उसे अनंत कहा जा सकता है फिर भी यज्ञ के विषय में कुछ कह देना उचित प्रतीत होता है[9]।

यज्ञ का स्वरूप

श्रुति में वैदिक कर्मों को पांच भागों में बांटा गया है " :स एश यज्ञ पञ्चविधोऽग्निहोत्रं, दर्शपूर्णमासौ, चातुर्मास्यानि, पशुः, सोम":[10] स्मृति में ऑपसनहोम, वैश्वदेव, पार्वण,

[7] वैदिक यज्ञ प्रतीकात्मक मीमांसा

[8] कात्यायनयज्ञपद्धतिविमर्श

[9] वैदिक कोश

[10] ऐ०ब्रा०

अष्टका, मासि श्राद्ध, श्रावण, शूलगव यह सात पाकयज्ञ - संस्थाएं हैं। अग्निहोत्र, दर्श और पूर्णमास, आग्रयण, चातुर्मास्य, निरूढ -पशुबन्ध, सौत्रामणी, पिण्डपितृयज्ञ आदि सात हविर्यज्ञ संस्थाएं हैं; अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्रि, आप्तोर्यामा ये सात सोम संस्थाएं हैं[11]। इन श्रौत एवं स्मार्त संस्थाओं को मिलाकर इक्कीस बन जाते हैं: 'स एवं त्रिवृतं सप्ततन्तुमेकविंशतितख्यं यज्ञमपश्यत्[12]। इनमें स्मृति में पाकयज्ञसंस्थाओं का निरूपण स्मृति एवं ग्रहों में किया गया है उनके स्वरूप का संक्षेप में यहां निरूपण किया जाता है : स्मार्त संस्थाओं का अनुष्ठान स्मार्त अग्नि वाले व्यक्ति को ही अपनी अग्नि में करना चाहिए।[13]

अथैषा यज्ञस्य।

चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवा मर्त्याम् आविवेश ।।

मन्त्रार्थ -अस्य इस ब्रह्म के चत्वारि श्रृग्डां :चार वेद ही चार सींग है अस्य इसके त्रय :पादा :तीन सवन तथा तीन लोक ही पैर हैं द्वे शीर्षे दो सिर हैं -प्रायणीय और उदनीय अर्थात प्रारम्भ और अंत ही) यज्ञ के (अथवा लोक के सृष्टि और प्रलय ही इसके दो सिर हैं। सप्त हस्तास :सप्त छन्दांसि -सात छंद ही इसके साथ हाथ हैं। त्रिधा बद्ध :मन्त्र -ब्राह्मण-कल्पै : ऋक्, यजु, और साम अर्थात् स्तुति, प्रार्थना और उपासना इन तीनों प्रकारों में बंधा हुआ वृषभ :यह सुख की वर्षा करने वाला यज्ञ ब्रह्म रोरवीति गर्जना करता है य :देव :यह महान देव मर्त्यान् अविवेश संगमन के लिए मनुष्य में प्रविष्ट हुआ है।

इन यज्ञों के लिए विधि के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख

- **हविर्याग:** अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रयण, चातुर्मास्य, निरूढपशुबन्ध, सौत्रामणी।
- **सोमयाग:** अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, अतिरात्र, षोडशी, वाजपेय, आप्तोर्याम
- **पाकयज्ञ:** औपासन होम, वैश्वदेव, पार्वण, अष्टका, मासिक श्रद्धा, श्रवणा, शूलगव|
- **सोम यज्ञ:** सोमयाग ही आर्यों का अत्यंत प्रसिद्ध याग है। यह बहुत ही विस्तृत, दीर्घकालीन तथा बहुसाधनव्यापी व्यापार है। इसके प्रधानतः कालगणना की दृष्टि से तीन प्रकार है -1. एकाह - एक दिन में साध्ययाग 2. अहीन - दो दिनों से लेकर 12 दिनों तक चलने वाला याग। 3. सत्र - 13 दिनों से आरंभ कर पूरे वर्ष तक तथा एक हजारों वर्षों तक चलने वाला याग। सोमलता के रस की आहुति देने से यह सोमयाग कहलाता है। आज यह लता भारतवर्ष में उपलब्ध नहीं है। अतः उसकी कोई प्रतिनिधि 'पूतीका' नामक लता का आजकल प्रयोग होता है। इसमें 16 ऋत्विजों का कार्य होता है।

सोमयाग

ओषधिः सोमः सुनोतेर्यदेनमभिषुण्वन्ति। बहुलमस्य नैघण्टुकं वृत्तमाश्चर्यमिव प्राधान्येन। तस्य पावमानीषु निदर्शनायोदाहरिष्यामः।[14]

सोमः सोम ओषधिः ओषधि है, यह सोम शब्द सुनोतेः षुञ् अभिषवे धातु से बनता है। षुञ् से यन् प्रत्यय करने पर। यत् क्योंकि एनम् इस सोम को अभिषुण्वन्ति निचोड़ कर रस निकालते हैं। अतः यह सोम हुआ। अस्य इस सोम ओषधि का वेदों में बहुलम् नैघण्टुकं वृत्तम् गौणत्वेन बहुतायत से वर्णन है, परंतु प्राधान्येन मुख्यरूप से आश्चर्यम् इव बहुत कम पाया जाता है। तस्य उस सोम का पावमानीषु पावमानी ऋचाओं में -अर्थात् 'पवमनः सोमः' इस देवतावाची ऋचाओं में आये उसके प्रधान वर्णन को निदर्शनाय दिग्दर्शन के रूप में उदाहरिष्यामः यहां उद्धृत करते हैं।

- **अग्निष्टोम** - यज्ञायज्ञा वो अग्नये) ऋ .6/48/1, साम, मन्त्र संख्या 35) ऋचा पर साम-गान 'अग्निष्टोम संस्था' और लघुता की दृष्टि से केवल अग्निष्टोम। 'संस्था' का अर्थ है 'अन्त'। अग्निष्टोम ही इसमें सबसे अंतिम साम होता है। यही इस नामकरण का हेतु है। यह याग 5 दिनों तक चलता है। ऐष्टिक वेदी में आनुषंङ्गिक्क इष्टियों का तथा सौमिक वेदि पर प्रधान इष्टियों का अनुष्ठान किया जाता है। प्रकृति याग होने से इसका विशेष महत्तव है। 12 शास्त्रों का प्रयोग इसकी विशिष्टता है।
- **उक्थ्य** - उक्थ्य नामक साम से समाप्य याग। इसमें पुर्व

[11] गौ० ध० ८.१८
[12] गो .ब्रा० १.१.१२
[13] वैदिक कोश
[14] निरुक्तम् पेज स. 498

याग के तीन शस्त्र अधिक होते हैं। अतः शास्त्रों की संख्या 15 होती है। ये अधिक तीनों शस्त्र उक्थ्यशस्त्र कहलाते हैं।

- **षोडशी** - इस दृष्टि से उक्थ्य के अनंतर एक षोडशी नामक स्त्रोत और भी विद्यमान रहता है। पन्द्रह स्त्रोतों को गर्भित कर एक अधिक स्त्रोत की सत्ता इसकी विशिष्टता है। यह स्वतंत्र क्रतु नहीं है। इसीलिए अग्निष्टोम के समान इसका अनुष्ठान पृथक रूप से नहीं होता।
- **अतिरात्र** - षोडशीस्तोत्र के अनंतर अतिरात्र -संज्ञक सामों का गायन इस याग के अंत में होता है। इसीलिए यह अतिरात्र के नाम से प्रख्यात है। निर्दिष्ट इन च**(के)** यज्ञों का सामूहिक अभिधान 'ज्योतिष्टोम' है। तैत्तिरीय ब्राह्मण)1/5/11) के अनुसार त्रिवृत, पंचदश, सप्तदश तथा एकविंश -इन चारों स्तोमों को 'ज्योतिः' पद के द्वारा संकेतित किया जाता है और इन यज्ञों में इन्हीं की प्रधानता होने से यह नामकरण है।
- **अत्यग्निष्टोम** -यह याग है जिसमें अग्निष्टोम के अनंतर बिना किए ही षोडशी का विधान किया जाता है। वाजपेय तथा आप्तोर्याम -पूर्वोक्त ज्योतिष्टोमों में आवापोद्वाप से निष्पन्न संस्थाएं हैं। इन सबकी प्रकृति होने से 'अग्निष्टोम' का ही विशेष वर्णन श्रोत्र -सूत्रों में अत्यधिक उपलब्ध होता है। सोम का त्रिषवण होता है - प्रातः सवन, माध्यन्दिन सवन तथा सायं सवन। सवन कर्म की 'सुत्या' के नाम से अभिहित होता है। इन यज्ञों के अतिरिक्त अन्य यागों में गवामयन)सत्र (वाजपेय राजसूय तथा अश्वमेध मुख्य हैं।
- **आप्तोर्याम यज्ञ –** यह यज्ञ अतिरात्रि यज्ञ के अन्तर्गत परिगणन है। इसमें 33 स्तोत्र और 33 शस्त्र होते हैं। अग्नि, इंद्र, विश्वेदेव एवं विष्णु के लिए क्रमशः एक-एक सोम की आहुति दी जाती है। इसका संपादन पशु हित के लिए किया जाता है।[15]
- **वाजपेय यज्ञ-** इस यज्ञ का संबंध मुख्य रूप से क्षत्रिय से प्रतिपादित है। इसमें सोम रस का पान होता है। इसके कृत्य में षोडशी यज्ञ की विधि को अपनाया गया है। इसमें 17 की संख्या को विशेषता प्राप्त है। इसका संपादन 17 दिन से 1 वर्ष तक किया जा सकता है।[16]

क. मूल ग्रंथ

1. आश्वलायनश्रौतसूत्रम्, प्रधानसंपादक -डॉ .मंडनमिश्र, नारायणकृतवृत्तिसमेतम्, श्रीलालबहादुरशास्त्रिकेंद्रीयसंस्कृतविद्यापीठस्य -1974-1975, प्रथम संस्करण 500 प्रतय:।
2. आपस्तम्ब श्रौतसूत्र एक अध्ययन, कपिल देव शुक्ल, , वैशाली प्रकाशन गोरखपुर प्रथम संस्करण 1998 ।
3. कात्यायनश्रौतसूत्रम्, कात्यायनीहिंदीव्याख्याकार -:श्री केदारनाथ द्विवेदी, हिंदीव्याख्या - अक्षरानुसारिसूत्रानुक्रमसमन्वितम्, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण 2015 ।

ख. प्रकाशित शोधग्रंथ

- **पंडित श्रीवेणीरामशर्मा गौड, श्रौतयज्ञ परिचय, प्रकाशन 1999**

श्रौतयज्ञ परिचय में यज्ञ आदि का स्वरूप, स्मार्त आघानकाल, स्मार्त अग्नि में कर्तव्य कर्म, पाकयज्ञों में प्रथम यज्ञ औपासनहोम, वैश्वदेव कर्म, पार्वण, अष्टकाश्राद्ध,मासि श्राद्ध, श्रावणाकर्म, शूलगव, श्राैतआघान काल और उसके अधिकारी, अग्निहोत्र में द्रव्य और देवता,दर्शपूर्णमास याग, दर्शपूर्णमास सब इष्टियों की प्रकृति, दर्शपूर्णमास याग के पदार्थ, चातुर्मास्य याग, प्रथम वैश्वदेव पर्व, वरुणप्रघास नामक द्वितीय पर्व, साकमेघसंजक तृतीय पर्व, शुनासीरीयसंजक चतुर्थ पर्व, चातुर्मास्ययाग में दो पक्ष, निरुढपशुबंध, आग्रयणेष्टि, सौत्रामणीयाग,सोमयाग का निरूपण, महाभिषव, सवनीय पशु, ऋतु ग्रह, माध्यन्दिन सवन, तृतीय सवन, वृतभृथ, द्वादशाह यज्ञ, वाजपेय यज्ञ, राजसूय यज्ञ, पुरुषमेधयाग, अश्वमेध यज्ञ, पितृमेधयाग, एकाह याग, सत्रों का निरूपण

- **डॉ पाण्डुरंग वामन काणे, धर्मशास्त्र का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, प्रथम संस्करण 1963, द्वितीय संस्करण 1972, तृतीय संस्करण 1980, चतुर्थ संस्करण 1992.**

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्राक्कथन, उद्धरण संकेत, धर्म का अर्थ और धर्म शास्त्रों का परिचय, धर्म के उपादान, धर्मशास्त्र ग्रंथों का निर्माण काल, धर्मसूत्र गौतम, धर्मसूत्र बौधायनधर्मसूत्र, आपसतम्ब धर्मसूत्र, हिरण्यकेशि धर्मसूत्र, वशिष्ठ धर्मसूत्र, विष्णु धर्मसूत्र, हारीत धर्मसूत्र, मानव, कौटिल्य का

[15] आश्वलायन श्रौत सूत्र, 9.11.1

[16] ऐतरेय ब्राह्मण अध्याय 19 से 24 तक।

अर्थशास्त्र,वैखानस, धर्म संबंधी अन्य सूत्र अत्री, उशना, काण्व, गाग्य, जातूकर्ण्य, देवल, स्मृतियां, मनुस्मृति,दोनो महाकाव्य)रामायण -महाभारत(, पुराण, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, बृहस्पति, कात्यायन, अंगिरा, ऋष्यशृंग, कार्ष्णजिनि, दक्ष, पितामह, पुलस्त्य, प्रचेता

द्वितीय खंड में धर्मशास्त्र के विभिन्न, वरुण, वरुण के कर्तव्य, योग्यताएं एवं विशेषाधिकार, दास प्रथा, संस्कार, आश्रम, उपनयन, सती प्रथा, आह्निक एवं आचार्य, पंच महायज्ञ, वैश्वदेव, मनुष्य यज्ञ, भोजन उपाकर्म, उत्सर्जन, दान, प्रतिष्ठा एवं उपसर्ग, वानप्रस्थ, सन्यास, वैदिक यज्ञ, चातुर्मास, पशुबंध, अग्निष्टोम, अन्य सोमयज्ञ, सोत्रामणी, अश्वमेध यज्ञ|

- **डॉ प्रयाग नारायण मिश्र, आपस्तम्बीय श्रौतयाग-मीमांसा, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ प्रकाशन 2006**

इस ग्रंथ में यज्ञ शब्द की व्युत्पत्ति और उसका अर्थ, देवपूजा-संगतिकरण-दान, वैदिक यज्ञों का विकासक्रम, वैदिक यज्ञों का वर्गीकरण, पाक-यज्ञ, हविर्यज्ञ, सोमयाग, प्रकृतियज्ञ, विकृतियज्ञ, प्रकृति-विकृतियज्ञ,श्रौतयज्ञों की संख्या और आपस्तम्बीय श्रौतयाग, यज्ञ-तालिका, दर्शपूर्णमासेष्टि का आनुष्ठानिक प्रयोग, अग्न्युद्धरण तथा अन्वाधान, ऋत्विग्वरण, ब्रह्मावरण, शाखाहरण, बर्हिराहरण, इध्माहरण, सायंदोह, परिस्तरण -पात्रासादन-प्रणीताप्रणयन, निर्वाप, हविर्द्रव्य-संस्कार, पुरोडाश-श्रपण, वेदि-निर्माण, पत्नी-सन्नहन-पात्रसम्मार्जन, वेदिस्तरण, सामिधेनीवाचन, पञ्च-प्रयाज, आज्यभागाहुति, प्रधान यागस्विष्टकृत् याग, प्राशित्र-प्राशन, इडावदान, इडाह्वान तथा इडा-प्राशन, अन्वाहार्य, अनुयाज-त्रय, पत्नी संयाज, यजमान-कृत्य, व्रतविसर्जन-ब्राह्मणतर्पण, पिण्डपितृयज्ञ, अग्न्याधेय तथा अग्निहोत्र-अग्न्याधेय का आनुष्ठानिक-प्रयोग, अग्न्याधेयकाल, अरणीसन्नयन तथा अग्निगृह-निर्माण, अग्न्यायतन-परिमाणादि -विशेष, अग्न्याधेय-विधि, गार्हपत्याग्नि-प्रतिष्ठा, निरूढ-पशुबन्ध याग का अनुशीलन, विहित काल, फल एवं प्रयोजन, देवता-हविर्द्रव्य एवं ऋत्विज्, यज्ञ-विधि, याग-वेदि एवं विहार, अग्निष्टोम याग-परिशीलन, अग्निष्टोम याग का विहित काल, अग्निष्टोम याग का अधिकारी, सोमयाग में अग्निष्टोम का प्राथम्य, सोमलता का परिचय, सोमयाग-हेतु ऋत्विज्-वरण, अग्निष्टोम याग के प्रथम दिन के कृत्य, दीक्षणीयेष्टि, अप्सुदीक्षा -पत्नी दीक्षा, नवनीत दीक्षा, अञ्जन दीक्षा, दक्षिणा दान, मरुत्वतीय ग्रह-प्रचार, तृतीय सवन, उपसंहार।

आपस्तम्बीय उक्थ्य तथा सोम संस्थाएं, उक्थ्य, षोडशीयाग, अतिरात्र, अप्तोर्याम, अत्यग्निष्टोम, वाजपेय-याग, यज्ञ-प्रयोजन एवं यज्ञाधिकारी, यज्ञ-काल, राजसूय-यज्ञ, अश्वमेध, पुरुषमेध और सर्वमेध यज्ञों का अनुशीलन, आपस्तम्बीय अन्य यज्ञों का समीक्षात्मक अध्ययन आदि वर्णन है।

- **संपादक डॉ .मनोहर लाल द्विवेदी, कात्यायनयज्ञपद्धतिविमर्श, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली 110058, द्वितीय संस्करण 2010**

इसमें विश्व साहित्य में वेद का स्थान, वेद की महिमा, वेद की संख्या, प्रतिपाद्य विषय, वेद का धर्म से संबंध, वेद की शाखाएं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद,| वेद संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, षड वेदांग- शिक्षा, निरुक्त, कल्प, कल्प का ब्राह्मण और आरण्यक से संबंध, श्रौतसूत्र का प्रयोजन, श्रौतसूत्र प्रतिपाद्य कर्म का प्रविधियां श्रोत अनुष्ठान के चार प्रकार- नित्य, नैमित्तिक, काम्य, निषध अधिकारी,। यजमान श्रौत परंपरा, श्रौतसूत्र के आचार्य, महर्षि कात्यायन की विशेषता, यज्ञों का इतिहास, यज्ञ तथा पाक संस्था, स्मार्ताधान :स्मार्ताधान का समय, स्मार्ताग्नि पर कर्तव्य अनुष्ठान, श्रौताधान :पूर्व दिन का कृत्य, अग्नि परिग्रह, अग्निहोत्री का कर्तव्य। पुनराधान :पुनराधान का कारण, समय, कार्यविधि। प्रवासविधि :लक्षण, उपस्थान, प्रत्यावर्तनविधान। अग्निहोत्रहवन, पौणमासयाग, पिंडपितृयज्ञ, दर्शयाग, दक्षायणयाग, सान्नाय्यवती दर्शेष्टि।आग्रयण, चातुर्मास्य याग, चातुर्मास्य के प्रकार. निरूढपशुबन्ध याग, सौत्रामणी याग आदि ।

- **प्रो० ओम प्रकाश पाण्डेय, वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान**, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर, दिल्ली प्रथम सं० 2004

वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान में हविर्याग प्रमुख कृत्यों की प्रतीकात्मकता, अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रयण, ताण्ड्यमहाब्राह्मण में प्रतिपादित यज्ञ विज्ञान, सोमयाग का वैशिष्ट्य, सोमलता का विकल्प, मानव जीवन एवं प्रकृति के समानांतर यज्ञ योजन, श्रौतयागो में तांत्रिक रितियों के समावेश का प्रयोजन आदि।

- **डॉ .सुमन शर्मा, वैदिक यज्ञ प्रतीकात्मक मीमांसा** (यजुर्वेद के विशेष संदर्भ में), प्रथम संस्करण 2012

इसमें प्रथम अध्याय में वेद का सामान्य परिचय, वेद शब्द का अर्थ एवं विपत्ति, उद्भव और संख्या, यजु :का अभिप्राय, विषय वस्तु, द्वितीय अध्याय में ब्राह्मण शब्द का अर्थ, काल निर्धारण, विषय वस्तु, विधि-विधान और संख्या ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद के ब्राह्मण, ऐतिहासिक, धार्मिक, दार्शनिक महत्व, तृतीय अध्याय में आरण्यक शब्द का अर्थ, विषय वस्तु, संकलन, काल ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद के आरण्यक, यजुर्वेदीय आरण्यकों का महत्व आदि।

- **डॉ .लालता प्रसाद द्विवेदी, वैदिक वांग्मय में चातुर्मासयज्ञ**, संस्करण 2005

इसमें प्रथम अध्याय में यज्ञ शब्द का अर्थ एवं परिभाषा, यज्ञ के अंग -देवता, द्रव्य, मंत्र, दक्षिणा, यज्ञ का वर्गीकरण तथा संस्थाएं, चातुर्मास से याग अर्थ, महत्व एवं पर्व, द्वितीय अध्याय में यज्ञ और वेद का संबंध तथा उनकी प्राचीनता, यज्ञ का आधारिक वैज्ञानिक स्वरूप, चातुर्मास यज्ञ उद्भव तथा प्राचीनता, तृतीय अध्याय में वैश्वदेव पर्व, चतुर्थ अध्याय में वरुणप्रघास पर्व, पंचम अध्याय में साकमेध पर्व, षष्ठ अध्याय में शुनासीरिय पर्व आदि।

- **प्रो० ओम प्रकाश पांडे, वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान,** भारतपुरी उज्जैन 456010

इसमें वैदिक सृष्टि विज्ञान, वैदिक विज्ञान और आधुनिक साइंस, वैदिक सृष्टि की अवधारणाओं का सातत्य, वैदिक विज्ञान की निगूडता, पुरुषमेध यज्ञों का स्वरूप एवं रहस्य, यज्ञ हिंसा रहित है, यज्ञ से आरोग्य वैदिक वांग्मय में प्राण विज्ञान आदि।

ग. प्रबंधात्मक शोध कार्य

- Yajnapaddhati of Katyayana-srautasutra, Dwivedi Maboharlal, Agra, 1962, Ph. D
- Concept of Yajna in the Rgveda, Pathak Naresh Chandra, Rajasthan, 1965, Ph. D
- Concept of Yajna in Vedic Literature, Langayan, Rambhagath, Kurukshetra University, 1983, Ph. D
- Yajna and Karma as Instruments of self-culture and fulfilment in Hindu Thoughts, Rama Murthy K, Mysore (In progress)
- यजुर्वेदीय भ्रमण एवं आरण्यक ग्रंथों में यज्ञ की प्रतीकात्मक व्याख्या एक अध्ययन, सुमन, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2009

शोध प्रबंध में वेद का अर्थ, संख्या, यजुर्वेद की प्राचीनता, विषय वर्णन, शाखाएं, धर्म आदि विषयों का वर्णन है। ब्राह्मण शब्द का अर्थ, संख्या, काल, निर्धारण, चारों वेदों के ब्राह्मणों की संख्या, विषय वस्तु एवं महत्व इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। आरण्यक शब्द की परिभाषा, विषय वस्तु, आरण्यक - उपनिषद का संबंध, चतुर्वेदी अरण्यक ग्रंथों की विषय वस्तु, प्राचीन -वैदिक काल और आधुनिक प्रतीक में या गुण की संख्या यज्ञों की संख्या, यज्ञ के प्रतीकों का महत्व, प्राचीन व आधुनिक प्रतीक, यज्ञ की ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सामाजिक उपयोगिता आदि विषय वर्णित है।

घ. लघुप्रबंधात्मक शोध कार्य

- शतपथ-ब्राह्मण में प्रतिपादित यज्ञ-याग, मिश्र राजेश्वर प्रसाद, हिमाचल विश्वविद्यालय, १९८३, एम .फिल.
- शतपथब्राह्मण में प्रतिपादित हविर्यज्ञ, सत्यवान्, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, २००२
- ऐतरेयब्राह्मण में प्रतिपादित दीक्षणीयेष्टि :आचार्यसायण के आलोक में, आर्य सुकान्त, दिल्ली विश्वविद्यालय, २०१८, एम.फिल्.
- ऐतरेयब्राह्मण में सोमयाग :एक अध्ययन, मोनू सैनी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

ङ. कोश-ग्रंथ

- वैदिक कोश डॉ० सूर्यकांत, बनारस, 1963

- उणादिकोष, स्वामीदयानंद, युधिष्ठिर, भीमासक, प्रथम सं०, 1974
- अमर कोश, देवदत्त तिवारी, नाग प्रकाशक, दिल्ली, प्रथम सं० 1879
- धर्मशास्त्र कोष, पं० श्री कुलमणिमिश्रशर्मा, भुवनेश्वर, प्रथम सं०, 1981
- वाचस्पत्यम्, चौखंबा संस्कृत सीरीज, वाराणसी चतुर्थ सं० 1990
- वेदिक रिच्युल, एच० जी० राणाडे, आर्यन बुक इंटरनेशनल, नई दिल्ली, प्रथम सं०, 2006
- शब्दकल्पटुम, राजा राधाकांत देव, चौखंबा संस्कृत सीरीज, वाराणसी-1
- संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, द्वारका प्रसाद, प्रयाग, विक्रम सं०, 2024

च. शोध-पत्र-पत्रिकाएं

- पावमानी, त्रैमासिक शोध पत्रिका, गुरुकुल प्रभाव आश्रम (टिकरी), भोलाझाल, मेरठ, अप्रैल से सितंबर, 2005
- यजुर्वेद में यज्ञ, डॉ० श्रीवत्स शास्त्री , पावमानी त्रैमासिक शोध-पत्रिका, जून 2005
- यज्ञ एवं सामाजिक जीवन, डॉ० अर्चना विश्नोई, पावमानी, शोध पत्रिका, सितंबर 2005
- वेदवाणी, मासिक शोध पत्रिका, पाणिनि महाविद्यालय, रेवली, सोनीपत, हरियाणा, अगस्त 2005, सितंबर 2006

उपसंहार

इस शोध सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में यज्ञ वैदिक धर्म का मेरुदंड है। और वेद में सभी मनुष्य के लिए यज्ञ का विधान किया हुआ है। उक्त सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि पर शोधकर्ताओं ने व्यापक अध्ययन किए हैं जहां एक यज्ञ पर कार्य किया गया वहीं वैदिक कालीन समस्त यज्ञो पर भी कार्य हुआ है। तथा वैदिक यज्ञों पर भविष्य में शोध करने की संभावनाएं भी परिलक्षित होती हैं।

ब्राह्मण ग्रंथों में यज्ञ संस्था सर्वश्रेष्ठ है और इस संस्था का सर्वांग सहित विवेचन श्रौत तथा गृह सूत्रों में ही मिलता है स्मृति और कल्प ग्रंथों में स्मार्त और श्रौत कर्मों की संख्या 21 मानी गई है बाह्य रूप से देखने पर तो केवल किसी देवता विशेष के लिए द्रव्य का अग्नि में प्रवेश है परंतु यह विलक्षण रहस्य से संबंधित है जिस कर्म से सभी प्रकार जैसे देह, इंद्रिय, चित्त आदि की शुद्धि होती है जिस कर्म का फल स्वार्थ नहीं परार्थ होता है जिस कर्म से नया आवरण नहीं बनता बल्कि पहले का आवरण हट जाता है जो मार्ग जीवन को क्रमशः कल्याण के लिए अग्रसर होने में सहायता देता है और अंत में परम ज्ञान तक प्राप्त कराता है वही यज्ञ है गीता के अनुसार फल की आकांक्षा से रहित निष्काम भाव से किया गया कर्म ही यज्ञ कहलाता है।

सन्दर्भ

1. मालवीय सुधाकर, ऐतरेयब्राह्मण, प्रथम भाग, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी, 1986.
2. शास्त्री पं .पीएन पट्टाबीराम, यज्ञ तत्व प्रकाश, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, वाराणसी, पटना, बंगलुरु, मद्रास संस्करण, 1992.
3. द्विवेदी मनोहर लाल, कात्यायन यज्ञ पद्धति विमर्श, प्रथम संस्करण, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली,1988.
4. शुक्ल कपिल देव, आपस्तम्ब श्रोत सूत्र एक अध्ययन, प्रथम संस्करण, वैशाली प्रकाशन, गोरखपुर,1996.
5. शर्मा नारायणदत्त, अग्निष्टोम यज्ञ पद्धति विमर्श, यजुर्वेद पर आधारित, प्रथम संस्करण, अमर ग्रंथ पब्लिकेशन, 2002.
6. मालवीय सुधाकर, ऐतरेयब्राह्मण, द्वितीय भाग, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी, 2015
7. झा लक्ष्मेश्वर, कात्यायनश्रौतसूत्र, द्वितीय भाग, प्रथम संस्करण, चौखंबा पब्लिशर्स, वाराणसी,2015
8. दैवकरिण विरजानन्द, निरुक्तम्, आर्ष साहित्य संस्थानम्, गौतम नगरम्, दिल्ली, वि .स .2057.

सहायक ग्रन्थ

9. उपाध्याय, बलदेव : संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (प्रथम खण्ड : वेद), प्रथम संस्करण, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ वि. स. 2052. (1996 ई.)
10. उपाध्याय बलदेव, वैदिक साहित्य और संस्कृति शारदा मंदिर, काशी, 1967.
11. सूर्यकांत ,वैदिक देवशास्त्र, पाणिनि, अंसारी रोड, नई दिल्ली 1982.

कोश-ग्रन्थ

12. भगवद्दत्त, हंसराज, वैदिक-कोश, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर, पुनर्मुद्रित संस्करण, वाराणसी, 1992.
13. सूर्यकांत, वैदिक-कोश, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, पुनर्मुद्रित संस्करण, वाराणसी 2012.
14. आपटे वामन शिवराम, संस्कृत-हिंदी-कोश, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली, 1987.

ईंटरनेट

15. http://www.du.ac.in
16. http://www.shodhganga@inflibnet
17. http://www.sanskrit.nic.in
18. http://www.nationalgeographic.com
19. http://www.wikipedia.org/
20. http://www.hinduwisdominfo/